

## Popular Article

### मत्स्य तालाब का निर्माण और उपयुक्त स्थल का चयन

भूपेंद्र कुमार वर्मा

छात्र, मत्स्य पालन महाविद्यालय, कवर्धा (छत्तीसगड)

भोसले रामेश्वर व्यंकटराव

सहायक प्राध्यापक, मत्स्यपालन विभाग

मत्स्य महाविद्यालय, कवर्धा (छत्तीसगड)

मत्स्य पालन मत्स्य पालन को आय और रोजगार उत्पन्न करने वाले एक शक्तिशाली क्षेत्र के रूप में मान्यता प्रदान की गई है, क्योंकि यह कई सहायक उद्योगों के विकास को प्रोत्साहित करता है और यह सस्ता और पौष्टिक भोजन का स्रोत है, साथ ही साथ यह देश की आर्थिक रूप से पिछड़ी आबादी के एक बड़े वर्ग के लिए आजीविका का साधन भी है। देश के सामाजिक-आर्थिक विकास में मत्स्य क्षेत्र का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। भारत में मछली उत्पादन २०१९-२०२० के दौरान १४.१६ मिलियन मीट्रिक टन के सर्वकालिक उच्च स्तर पर पहुंच गया है। मत्स्य पालन क्षेत्र, भारत में तेजी से विकसित होता हुआ क्षेत्र है, भारत दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा मछली उत्पादक देश है और वैश्विक उत्पादन का ७.९६ % हिस्सा है। भारत मछली पालन के माध्यम से मछली का एक प्रमुख उत्पादक भी है और चीन के बाद दुनिया में दूसरे स्थान पर है। जो २८ मिलियन से ज्यादा लोगों को आय और रोजगार का अवसर प्रदान करने के अलावा देश की एक बड़ी आबादी को पोषण और खाद्य सुरक्षा भी प्रदान करता है।

#### मछली पालन हेतु तालाब का चयन एवं निर्माण

जिस प्रकार कृषि के लिए भूमि आवश्यक है उसी प्रकार मत्स्य पालन के लिए तालाब की आवश्यकता होती है। ग्रामीण अंचलों में विभिन्न आकार प्रकार के तालाब व पोखरों पर्याप्त संख्या में उपलब्ध होते हैं जो कि निजी, संस्थागत अथवा गांव सभाओं की सम्पत्ति होते हैं। इस प्रकार के तालाब संसाधन या तो निष्प्रयोज्य पड़े रहते हैं अथवा उनका उपयोग मिट्टी निकालने, सिंघाड़े की खेती करने, मवेशियों को पानी पिलाने, समीपवर्ती कृषि योग्य भूमि को सींचने आदि के लिए किया जाता है।

#### तालाब का निर्माण

##### 1. मत्स्य पालन हेतु तालाब का क्षेत्रफल

मत्स्य पालन हेतु 0.2 हेक्टेयर से 5.0 हेक्टेयर तक के ऐसे तालाबों का चयन किया जाना चाहिए जिनमें वर्ष भर 8-9 माह पानी भरा रहे। तालाबों को सदाबहार रखने के लिए जल की आपूर्ति का साधन होना चाहिए। तालाब में वर्ष भर एक से दो मीटर पानी अवश्य बना रहे।



## 2. तालाब का चुनाव

तालाब ऐसे क्षेत्रों में चुने जायें जो बाढ़ से प्रभावित न होते हों तथा तालाब तक आसानी से पहुंचा जा सके। बन्धों का कटा फटा व ऊँचा होना, तल का असमान होना, पानी आने-जाने के रास्तों का न होना, दूसरे क्षेत्रों से अधिक पानी आने-जाने की सम्भावनाओं का बना रहना आदि कमियां स्वाभाविक रूप से तालाब में पायी जाती हैं जिन्हें सुधार कर दूर किया जा सकता है। तालाब को उचित आकार-प्रकार देने के लिए यदि कही पर टीले आदि हों तो उनकी मिट्टी निकाल का बन्धों पर डाल देनी चाहिए। कम गहराई वाले स्थान से मिट्टी निकालकर गहराई एक समान करना है।

## 3. सावधानियाँ

तालाब के बन्धें बाढ़ स्तर से ऊंचे रखने चाहिए। पानी के आने व निकास के रास्ते में जाली की व्यवस्था आवश्यक है ताकि पाली जाने वाली मछलियां बाहर न जा सकें और अवांछनीय मछलियां तालाब में न आ सकें। तालाब का सुधार कार्य माह अप्रैल व मई तक अवश्य करा लेना चाहिए जिससे मत्स्य पालन करने हेतु समय मिल सके।

## तालाब प्रबन्ध व्यवस्था

मत्स्य पालन प्रारम्भ करने से पूर्व यह अत्यधिक आवश्यक है कि मछली का बीज डालने के लिए तालाब पूर्ण रूप से उपयुक्त हो।

## अनावश्यक जलीय पौधों का उन्मूलन

तालाब में आवश्यकता से अधिक जलीय पौधों का होना मछली की अच्छी उपज के लिए हानिकारक है। यह पौधे पानी का बहुत बड़ा भाग घेरे रहते हैं जिसमें मछली के घूमने-फिरने में असुविधा होती है। साथ ही यह सूर्य की किरणों को पानी के अन्दर पहुंचने में भी बाधा उत्पन्न करते हैं।

परिणामस्वरूप मछली का प्राकृतिक भोजन उत्पन्न होना रूक जाता है और प्राकृतिक भोजन के अभाव में मछली की वृद्धि पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।

इसके अतिरिक्त यह पौधे मिट्टी में पाये जाने वाले रासायनिक पदार्थों का प्रचूषण करके अपनी बढ़ोत्तरी करते हैं और पानी की पौष्टिकता कम हो जाती है। मछली पकड़ने के लिए यदि जाल चलाया जाय तब भी यह पौधे रूकावट डालते हैं। सामान्यतः तालाबों में जलीय पौधे तीन प्रकार के होते हैं – एक पानी की सतह वाले जैसे जलकुम्भी, लेमना आदि, दूसरे जड़ जमाने वाले जैसे कमल इत्यादि और तीसरे जल में डूबे रहने वाले जैसे हाइड्रिला, नाजाज आदि।

यदि तालाब में जलीय पौधों की मात्रा कम हो तो इन्हें जाल चलाकर या श्रमिक लगाकर जड़ से उखाड़कर निकाला जा सकता है। अधिक जलीय वनस्पति होने की दशा में रसायनों का प्रयोग जैसे 2-4 डी सोडियम लवण, टेफीसाइड, हैक्सामार तथा फरनेक्सान 8-10 कि. ग्रा. प्रति. हे जलक्षेत्र में प्रयोग करने से जलकुम्भी, कमल आदि नष्ट हो जाते हैं।

रसायनों के प्रयोग के समय विशेष जानकारी मत्स्य विभाग के कार्यालयों से प्राप्त की जानी चाहिए। कुछ जलमग्न पौधे ग्रास कार्प मछली का प्रिय भोजन होते हैं अतः इनकी रोकथाम तालाब में ग्रासकार्प मछली पालकर की जा सकती है। उपयुक्त यही है कि अनावश्यक पौधों का उन्मूलन मानव-शक्ति से ही सुनिश्चित किया जाय।



### अवांछनीय मछलियों की सफाई

पुराने तालाबों में बहुत से अनावश्यक जन्तु जैसे कछुआ, मेंढक, केकड़े और मछलियां जैसे सिंधरी, पुठिया, चेलवा आदि एवं भक्षक मछलियां उदाहरणार्थ पढ़िन, टैगन, सौल, गिरई, सिंघी, मांगुर आदि पायी जाती हैं जो कि तालाब में उपलब्ध भोज्य पदार्थों को अपने भोजन के रूप में ग्रहण करती हैं। मांसाहारी मछलियां कार्प मछलियों के बच्चों को खा जाती है जिससे मत्स्य पालन पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। अतः इनकी सफाई नितान्त आवश्यक है। अवांछनीय मछलियों का निष्कासन बार-बार जाल चलाकर या पानी निकाल कर अथवा महुआ की खली के प्रयोग द्वारा किया जा सकता है। महुए की खली का प्रयोग एक हेक्टेयर क्षेत्रफल के एक मीटर पानी की गहराई वाले तालाब में 25 कुंटल की दर से किया जाना चाहिए।

इसके परिणाम स्वरूप 6-8 घंटों में सारी मछलियां मर कर ऊपर आ जाती हैं जिन्हें जाल चलाकर एकत्र करके बाजार में बेचा जा सकता है। महुए की खली का प्रयोग तालाब के लिए दोहरा प्रभाव डालता

है। विष के अलावा 15-20 दिन बाद यह खाद का भी कार्य करती है जिससे मछली के प्राकृतिक भोजन का उत्पादन होता है।

### **जलीय उत्पादकता हेतु चूने का प्रयोग**

पानी का हल्का क्षारीय होना मत्स्य पालन के लिए लाभप्रद है। पानी अम्लीय अथवा अधिक क्षारीय नहीं होना चाहिए। चूना जल की क्षारीयता बढ़ाता है अथवा जल की अम्लीयता व क्षारीयता को संतुलित करता है। इसके अतिरिक्त चूना मछलियों को विभिन्न परोपजीवियों के प्रभाव से मुक्त रखता है और तालाब का पानी उपयुक्त बनाता है। एक हेक्टेयर के तालाब में 250 कि. ग्रा चूने का प्रयोग मत्स्य बीज संचय से एक माह पूर्व किया जाना चाहिए।

### **गोबर की खाद का प्रयोग**

तालाब की तैयारी में गोबर की खाद की महत्वपूर्ण भूमिका है। इससे मछली का प्राकृतिक भोजन उत्पन्न होता है। गोबर की खाद, मत्स्य बीज संचय से 15-20 दिन पूर्व सामान्यतया 10-20 टन प्रति हे० प्रति वर्ष 10 समान मासिक किशतों में प्रयोग की जानी चाहिए। यदि तालाब की तैयारी में अवांछनीय मछलियों के निष्कासन के लिए महुआ की खली डाली गयी हो तो गोबर की खाद की पहली किशत डालने की आवश्यकता नहीं है।

### **रासायनिक खादों का प्रयोग**

सामान्यतः रासायनिक खादों में यूरिया 200 किलोग्राम, सिंगिल सुपर फास्फेट 250 कि. ग्रा. व म्यूरेट ऑफ पोटाश 40 कि०ग्रा० अर्थात् कुल मिश्रण 490 कि.ग्रा प्रति हे प्रति वर्ष 10 समान मासिक किशतों में प्रयोग किया जाना चाहिए।

इस प्रकार 50 कि.ग्रा. प्रति हे प्रति माह रासायनिक खादों के मिश्रण को गोबर की खाद के प्रयोग 15 दिन बाद तालाब में डाला जाना चाहिए। यदि तालाब के पानी का रंग गहरा हरा या गहरा नीला हो जाये तो उर्वरकों का प्रयोग तब तक बन्द कर देना चाहिए जब तक पानी का रंग उचित अवस्था में न आ जाये।

### **जीरा संचयन:**

तालाब में छः चुनी हुई मछलियों के संचयन से उत्पादन अधिक होता है। इन मछलियों की अंगुलिकायें 4000 प्रति एकड़.

### **मछली पालन के निम्न चरण हैं –**

- ❖ **स्थान का चयन** - मछली पालन के लिए स्थल का चयन करते समय निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना चाहिए:
  - मछली पालन के स्थल के करीब अच्छी जल की सुविधा उपलब्ध होनी चाहिए।
  - आपको यह भी ध्यान रखना चाहिए कि स्थल बाढ़ग्रस्त क्षेत्र में थोड़ा ऊँचाई पर हो।
  - यदि मछली पालन के लिए तालाब दोमट मिट्टी (काली तथा रेतीली भूमि की मिट्टी) में बनाया जाए तो यह तालाब के पानी को अधिक समय तक स्थाई रखेगी।
  - यदि मछली पालन के लिए तालाब रेतीली मिट्टी में बनाया जाए तो इसका पानी जल्दी सूख जाता है। अगर तालाब शोरे की भूमि पर हो तो इस प्रकार के तालाब का चुनाव न करें क्योंकि इस प्रकार की भूमि मछली पालन के लिए योग्य नहीं होती है।

- मछली पालन के तालाब में आवश्यकता के अनुसार पानी डालने का प्रबंध होना चाहिए क्योंकि मछलियों के लिए तालाब में एक उचित स्तर पर पानी का होना आवश्यक है।
- मछली पालन के लिए कम से कम 1.25 से 2 मीटर गहराई का पानी का होना आवश्यक होता है और तालाब में पानी का सबसे अच्छा साधन नहर व नलकूप है।
- मछली पालन के तालाब में निश्चित स्थानों पर प्रवेश व निकास द्वार की व्यवस्था होनी चाहिए। अगर प्रवेश की व्यवस्था नहीं होगी तो चारों ओर से वर्षा का पानी आपके तालाब में प्रवेश करेगा जो तालाब के बन्धों को नुकसान पहुंचा सकता है। इसी प्रकार अगर निकास नहीं होगा तो हो सकता है कि अधिक वर्षा के कारण पानी तालाब के बंध टूट जाए।
- तालाब के प्रवेश व निकास द्वार पर लोहे की बारीक जाली लगी होनी चाहिए। यदि जाली नहीं होगी तो तालाब की मछलियाँ तालाब से पानी के साथ बाहर निकल जाएंगी और बारिश का पानी बाहर से कुछ हानिकारक व अवांछित मछलियाँ व अन्य जीव-जंतु भी तालाब में प्रवेश कर लेंगे।
- तालाब के चारों ओर मजबूत बंध बनाए, अगर आप ऐसा नहीं करेंगे तो पशु आदि तालाब में निश्चित स्थान से प्रवेश करेंगे और पानी का फैलाव होगा।
- तालाब में बहुत अधिक जलिय पौधे नहीं होने चाहिए।

### मछली पालन का समय निर्धारण एवं प्रक्रिया

#### 1. पहली तिमाही (अप्रैल, मई व जून का महीना)

- उपयुक्त तालाब का चुनाव।
- नये तालाब के निर्माण हेतु उपयुक्त स्थल का चयन।
- मिट्टी पानी की जांच।
- तालाब सुधार/निर्माण हेतु मत्स्य पालक विकास अभिकरणों के माध्यम से तकनीकी व आर्थिक सहयोग लेते हुए तालाब सुधार/निर्माण कार्य की पूर्णता।
- अवांछनीय जलीय वनस्पतियों की सफाई।
- एक मीटर पानी की गहराई वाले एक हेक्टेयर के तालाब में 25 कुन्तल महुआ की खली के प्रयोग के द्वारा अथवा बार-बार जाल चलवाकर अवांछनीय मछलियों की निकासी।
- उर्वरा शक्ति की वृद्धि हेतु 250 कि.ग्रा/हे चूना तथा सामान्यतः 10 से 20 कुन्तल/हेक्टे०/मास गोबर की खाद का प्रयोग।

#### 2. दूसरी तिमाही (जुलाई, अगस्त एवं सितम्बर का महीना)

- मत्स्य बीज संचय के पूर्व पानी की जांच (पी-एच 7.5 से 8.0 व घुलित आक्सीजन 5 मि०ग्रा०/लीटर होनी चाहिए)।
- तालाब में 25 से 50 मि. मी. आकार के 10,000 से 15,000 मत्स्य बीज का संचय।
- पानी में उपलब्ध प्राकृतिक भोजन की जांच।
- गोबर की खाद के प्रयोग के 15 दिन बाद का प्रयोग।

#### 3. तीसरी तिमाही (अक्टूबर, नवम्बर एवं दिसम्बर का महीना)

- मछलियों की वृद्धि दर की जांच।
- मत्स्य रोग की रोकथाम हेतु सीफेक्स का प्रयोग अथवा रोग ग्रस्त मछलियों को पोटेशियम परमैंगनेट या नमक के घोल में डालकर पुनः तालाब में छोड़ना।

- पानी में प्राकृतिक भोजन की जांच।
- पूरक आहार दिया जाना।
- 4. **चौथी तिमाही (जनवरी, फरवरी एवं मार्च का महीना)**
- बड़ी मछलियों की निकासी एवं विक्रय।
- बैंक के ऋण किस्त की अदायगी।
- एक हेक्टेयर के तालाब में कामन कार्प मछली के लगभग 1500 बीज का संचय
- पूरक आहार दिया जाना।
- उर्वरकों का प्रयोग।

#### **मछली पालन हेतु तालाब का चयन एवं निर्माण**

जिस प्रकार कृषि के लिए भूमि आवश्यक है उसी प्रकार मत्स्य पालन के लिए तालाब की आवश्यकता होती है। ग्रामीण अंचलों में विभिन्न आकार प्रकार के तालाब व पोखरें पर्याप्त संख्या में उपलब्ध होते हैं जो कि निजी, संस्थागत अथवा गांव सभाओं की सम्पत्ति होते हैं। इस प्रकार के जल संसाधन या तो निष्प्रयोज्य पड़े रहते हैं अथवा उनका उपयोग मिट्टी निकालने, सिंघाड़े की खेती करने, मवेशियों को पानी पिलाने, समीपवर्ती कृषि योग्य भूमि को सींचने आदि के लिए किया जाता है।

#### **तालाब का निर्माण**

##### **4. मत्स्य पालन हेतु तालाब का क्षेत्रफल**

मत्स्य पालन हेतु 0.2 हेक्टेयर से 5.0 हेक्टेयर तक के ऐसे तालाबों का चयन किया जाना चाहिए जिनमें वर्ष भर 8-9 माह पानी भरा रहे। तालाबों को सदाबहार रखने के लिए जल की आपूर्ति का साधन होना चाहिए। तालाब में वर्ष भर एक से दो मीटर पानी अवश्य बना रहे।

##### **5. तालाब का चुनाव**

तालाब ऐसे क्षेत्रों में चुने जायें जो बाढ़ से प्रभावित न होते हों तथा तालाब तक आसानी से पहुंचा जा सके। बन्धों का कटा फटा व ऊँचा होना, तल का असमान होना, पानी आने-जाने के रास्तों का न होना, दूसरे क्षेत्रों से अधिक पानी आने-जाने की सम्भावनाओं का बना रहना आदि कमियां स्वाभाविक रूप से तालाब में पायी जाती हैं जिन्हें सुधार कर दूर किया जा सकता है। तालाब को उचित आकार-प्रकार देने के लिए यदि कहीं पर टीले आदि हों तो उनकी मिट्टी निकाल का बन्धों पर डाल देनी चाहिए। कम गहराई वाले स्थान से मिट्टी निकालकर गहराई एक समान करना है।

##### **6. सावधानियाँ**

तालाब के बन्धें बाढ़ स्तर से ऊंचे रखने चाहिए। पानी के आने व निकास के रास्ते में जाली की व्यवस्था आवश्यक है ताकि पाली जाने वाली मछलियां बाहर न जा सकें और अवांछनीय मछलियां तालाब में न आ सकें। तालाब का सुधार कार्य माह अप्रैल व मई तक अवश्य करा लेना चाहिए जिससे मत्स्य पालन करने हेतु समय मिल सके।

#### **तालाब प्रबन्ध व्यवस्था**

मत्स्य पालन प्रारम्भ करने से पूर्व यह अत्यधिक आवश्यक है कि मछली का बीज डालने के लिए तालाब पूर्ण रूप से उपयुक्त हो।

## अनावश्यक जलीय पौधों का उन्मूलन

तालाब में आवश्यकता से अधिक जलीय पौधों का होना मछली की अच्छी उपज के लिए हानिकारक है। यह पौधे पानी का बहुत बड़ा भाग घेरे रहते हैं जिसमें मछली के घूमने-फिरने में असुविधा होती है। साथ ही यह सूर्य की किरणों को पानी के अन्दर पहुंचने में भी बाधा उत्पन्न करते हैं। परिणामस्वरूप मछली का प्राकृतिक भोजन उत्पन्न होना रूक जाता है और प्राकृतिक भोजन के अभाव में मछली की वृद्धि पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।

इसके अतिरिक्त यह पौधे मिट्टी में पाये जाने वाले रासायनिक पदार्थों का प्रचूषण करके अपनी बढ़ोत्तरी करते हैं और पानी की पौष्टिकता कम हो जाती है। मछली पकड़ने के लिए यदि जाल चलाया जाय तब भी यह पौधे रूकावट डालते हैं। सामान्यतः तालाबों में जलीय पौधे तीन प्रकार के होते हैं – एक पानी की सतह वाले जैसे जलकुम्भी, लेमना आदि, दूसरे जड़ जमाने वाले जैसे कमल इत्यादि और तीसरे जल में डूबे रहने वाले जैसे हाइड्रिला, नाजाज आदि।

यदि तालाब में जलीय पौधों की मात्रा कम हो तो इन्हें जाल चलाकर या श्रमिक लगाकर जड़ से उखाड़कर निकाला जा सकता है। अधिक जलीय वनस्पति होने की दशा में रसायनों का प्रयोग जैसे 2-4 डी सोडियम लवण, टेफीसाइड, हैक्सामार तथा फरनेक्सान 8-10 कि. ग्रा. प्रति. हे जलक्षेत्र में प्रयोग करने से जलकुम्भी, कमल आदि नष्ट हो जाते हैं।

रसायनों के प्रयोग के समय विशेष जानकारी मत्स्य विभाग के कार्यालयों से प्राप्त की जानी चाहिए। कुछ जलमग्न पौधे ग्रास कार्प मछली का प्रिय भोजन होते हैं अतः इनकी रोकथाम तालाब में ग्रासकार्प मछली पालकर की जा सकती है। उपयुक्त यही है कि अनावश्यक पौधों का उन्मूलन मानव-शक्ति से ही सुनिश्चित किया जाय।

## अवांछनीय मछलियों की सफाई

पुराने तालाबों में बहुत से अनावश्यक जन्तु जैसे कछुआ, मेंढक, केकड़े और मछलियां जैसे सिंधरी, पुठिया, चेलवा आदि एवं भक्षक मछलियां उदाहरणार्थ पढ़िन, टैंगन, सौल, गिरई, सिंधी, मांगुर आदि पायी जाती हैं जो कि तालाब में उपलब्ध भोज्य पदार्थों को अपने भोजन के रूप में ग्रहण करती हैं। मांसाहारी मछलियां कार्प मछलियों के बच्चों को खा जाती है जिससे मत्स्य पालन पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। अतः इनकी सफाई नितान्त आवश्यक है। अवांछनीय मछलियों का निष्कासन बार-बार जाल चलाकर या पानी निकाल कर अथवा महुआ की खली के प्रयोग द्वारा किया जा सकता है। महुए की खली का प्रयोग एक हेक्टेयर क्षेत्रफल के एक मीटर पानी की गहराई वाले तालाब में 25 कुंटल की दर से किया जाना चाहिए।

इसके परिणाम स्वरूप 6-8 घंटों में सारी मछलियां मर कर ऊपर आ जाती हैं जिन्हें जाल चलाकर एकत्र करके बाजार में बेचा जा सकता है। महुए की खली का प्रयोग तालाब के लिए दोहरा प्रभाव डालता है। विष के अलावा 15-20 दिन बाद यह खाद का भी कार्य करती है जिससे मछली के प्राकृतिक भोजन का उत्पादन होता है।

## जलीय उत्पादकता हेतु चूने का प्रयोग

पानी का हल्का क्षारीय होना मत्स्य पालन के लिए लाभप्रद है। पानी अम्लीय अथवा अधिक क्षारीय नहीं होना चाहिए। चूना जल की क्षारीयता बढ़ाता है अथवा जल की अम्लीयता व क्षारीयता को संतुलित करता है। इसके अतिरिक्त चूना मछलियों को विभिन्न परोपजीवियों के प्रभाव से मुक्त रखता है और तालाब



का पानी उपयुक्त बनाता है। एक हेक्टेयर के तालाब में 250 कि. ग्रा चूने का प्रयोग मत्स्य बीज संचय से एक माह पूर्व किया जाना चाहिए।

### **गोबर की खाद का प्रयोग**

तालाब की तैयारी में गोबर की खाद की महत्वपूर्ण भूमिका है। इससे मछली का प्राकृतिक भोजन उत्पन्न होता है। गोबर की खाद, मत्स्य बीज संचय से 15-20 दिन पूर्व सामान्यतया 10-20 टन प्रति हे० प्रति वर्ष 10 समान मासिक किशतों में प्रयोग की जानी चाहिए। यदि तालाब की तैयारी में अवांछनीय मछलियों के निष्कासन के लिए महुआ की खली डाली गयी हो तो गोबर की खाद की पहली किशत डालने की आवश्यकता नहीं है।

### **रासायनिक खादों का प्रयोग**

सामान्यतः रासायनिक खादों में यूरिया 200 किलोग्राम, सिंगिल सुपर फास्फेट 250 कि. ग्रा. व म्यूरेट ऑफ पोटाश 40 कि०ग्रा० अर्थात् कुल मिश्रण 490 कि.ग्रा प्रति हे प्रति वर्ष 10 समान मासिक किशतों में प्रयोग किया जाना चाहिए।

इस प्रकार 50 कि.ग्रा. प्रति हे प्रति माह रासायनिक खादों के मिश्रण को गोबर की खाद के प्रयोग 15 दिन बाद तालाब में डाला जाना चाहिए। यदि तालाब के पानी का रंग गहरा हरा या गहरा नीला हो जाये तो उर्वरकों का प्रयोग तब तक बन्द कर देना चाहिए जब तक पानी का रंग उचित अवस्था में न आ जाये।

### **जीरा संचयन:**

तालाब में छः चुनी हुई मछलियों के संचयन से उत्पादन अधिक होता है। इन मछलियों की अंगुलिकायें 4000 प्रति एकड़ संख्या में निम्नांकित अनुपात में डालना चाहिए-